परिचय

शान्ति की यीशु की बातें

सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में वह जानकारी मिलती है जो मत्ती, मरकुस और लूका में नहीं है। यह विवरण हमें पांच अध्यायों तक अटारी वाले कमरे में रखता है (अध्याय 13-17)। सुसमाचार के सहदर्शी वृत्तांत, मुख्य रूप में प्रभु-भोज की स्थापना पर ज़ोर देते हैं, जबकि यूहन्ना अपनी मृत्यु और विदाई के लिए अपने प्रेरितों को तैयार करने की यीशु की बातचीत पर ज़ोर देता है।

प्रेरितों के साथ बातें करते हुए यीशु ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि उन्हें अनाथ नहीं छोड़ा जाएगा। अध्याय 14 में उनके लिए जगह तैयार करने के लिए जाने की बात की और कहा कि वे वहां आ पाएंगे। इस दौरान वे जो कुछ भी करने को कहें, वह उसे करेगा। इसके अलावा अपनी व्यक्तिगत उपस्थिति, अपने प्रकाशन और अपनी निरन्तरता के द्वारा पवित्र आत्मा ने उनका सहायक बनने के लिए आना था। सहायक ने उन्हें वे सब बातें सिखानी थी। फिर यीशु ने बताया, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं'' (14:27)।

अध्याय 15 में उसने आगे कहा, ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में'' (15:4)। उसने दाखलता और उसकी टहनियों के बीच गहरे सम्बन्ध का वर्णन किया। नहीं, यीशु केवल प्रेरितों को अकेले नहीं छोड़ रहा था। एक-दूसरे के लिए प्रेम और यह कि उन्हें चुनने के अपने ढंग के बारे में बताते हुए उसने उनके निरन्तर सम्बन्ध की बात की।

अध्याय 16 में आश्चर्य की बात है कि उसने कहा, ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।'' उसने उनसे वायदा किया कि बाद में वे उसे फिर से देखेंगे। प्रेरितों के लिए यीशु को यह कहते सुनना कितना शांति देने वाला था। ''उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच-सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा'' (16:23ख)!

उसने बात पूरी की, ''मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है'' (16:33)। यीशु ने अपने प्रेरितों को पुन: आश्वासन तथा आशा का संदेश देकर शांति दी।

यीशु को शान्ति कैसे मिली?

यीशु की बातों से उसके प्रेरितों को बड़ी शांति मिली, पर अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पूर्व इस समय पर क्या मानवीय रूप में हमारे प्रभु को स्वयं सचमुच शान्ति चाहिए थी। यूहन्ना 13-17 भी दिखाता है कि इस अन्धेरी घड़ी में यीशु को किस प्रकार सहारा मिला, बल मिला और शांति मिली।

उसे अपने पिता के साथ अपने सम्बन्ध को देखकर सहारा मिला। वह इस घड़ी में पहुंचा

यह ''जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास आता हूं'' (13:3)। वह परमेश्वर का पुत्र था। वह पिता की ओर से आया था और शीघ्र ही उसने उस अनन्त स्थान में लौट जाना था। यूहन्ना 17 में उसकी प्रार्थना पिता के आगे उसके समर्पण और उसकी निकटता को दिखाती है।

उसे अपने भविष्य को देखने से सामर्थ मिली। उसके लिए कष्ट और मृत्यु को सहना आवश्यक था। फिर वह स्वर्ग में पिता के पास लौट सकता था (14:2, 12, 28; 16:10, 28)।

उसे अपने चेलों का ध्यान धर करके शान्ति मिली। यीशु को अपने चुने हुओं से प्रेम था: ''फसह के पर्ब्ब से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा'' (13:1)।

बड़ी-बड़ी परीक्षाओं के बीच हमें भी पिता के साथ अपने सम्बन्ध को, उस भविष्य को जो परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हमें मिला है, और प्रेम को याद करके जो हम अपने शारीरिक परिवार से और कलीसिया से विस्तृत परिवार के साथ करते हैं, बड़ी शान्ति मिल सकती है।